ISSN : 2230-8997

सहृदय

(भाषा, साहित्य, संस्कृति, संवेदना और शोध का त्रैमासिक)

(यू.जी.सी. की रैफर्ड पत्रिका सूची में शामिल)

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के
आंशिक वित्तीय सहयोग से प्रकाशित)

मानव-मूल्य और हिंदी साहित्य

(भाग-2)

वर्ष-12 **जुलाई-दिसंबर 2020** **विशेषांक : 45-46**

संपादक : प्रो. पूरनचंद टंडन

सह-संपादक : डॉ. विनीता कुमारी

संपादन सहयोग

डॉ. रोशन लाल मीणा
डॉ. सुरेश चंद मीणा
डॉ. ममता चौरसिया
विवेक शर्मा
निधि मिश्रा
साक्षी जोशी

'नव उन्नयन'
'संकल्प', डी-67, शुभम् एन्क्लेव, पश्चिम विहार
नई दिल्ली-110063

जीवन मूल्य और हिंदी कविता में 'प्रेम का मूल्य' / **गीता** -- **404**
हिंदी के आरंभिक उपन्यासों में मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति / **डॉ. श्रवण कुमार** -- **411**
मध्यकालीन कविता और मानव-मूल्य / **सुमन** -- **416**
मानव-मूल्य और उसके विविध आयाम / **डॉ. ममता चावला** -- **421**
रीतिकालीन नीतिकाव्य में मानव-मूल्य / **डॉ. पुनीत चाँदला** -- **430**
भारतीय मूल्य परंपरा और हिंदी साहित्य / **विवेक शर्मा** -- **437**
जयशंकर प्रसाद के नाटकों में जीवन मूल्य / **डॉ. नीलम राठी** -- **443**
कबीर और मानव-मूल्य / **डॉ. संगीता वर्मा** -- **449**
मानव-मूल्य तथा हिंदी गद्य साहित्य / **सुधांशु कुमार तिवारी** -- **455**
राम काव्यधारा में मानव-मूल्य / **डॉ. पार्वती शर्मा चाँदला** -- **460**
छायावाद और मानव-मूल्य / **डॉ. भावना शुक्ल** -- **466**
रीतिकालीन नीतिकाव्य में मानव-मूल्य / **सुरेश चंद्र** -- **474**
रीतिकालीन नीतिकाव्य में वैयक्तिक मानव-मूल्य / **यमुना प्रसाद** -- **483**
संत काव्य में मानव-मूल्य / **प्रशांत कुमार सिंह** -- **501**
राष्ट्रीय मूल्य और हिंदी साहित्य / **प्रदीप तिवारी** -- **507**
कबीर के काव्य में मानव-मूल्य / **शोभना** -- **512**
मीरा के काव्य में मानव-मूल्य / **स्वाति शर्मा** -- **519**
तुलसी के साहित्य में जीवन मूल्य / **काली सहाय** -- **528**
रीतिकालीन नीतिकाव्य में मानव-मूल्य / **प्रिया गौड़** -- **531**
हिंदी कथा साहित्य में मानवता और मानव-मूल्य / **डॉ. त्रिवेणी नागरवाल** -- **539**
मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता / **डॉ. रोशन लाल मीणा** -- **546**
तुलसी काव्य में मानव मूल्य / **कल्याण कुमार** -- **549**

डॉ. ममता चावला

मानव-मूल्य और उसके विविध आयाम

मानव को सच्चे अर्थों में मानव बनाने का श्रेय जिन उच्च आकांक्षाओं, आदर्शों, धारणाओं, मान्यताओं को है उन्हीं को मानव-मूल्यों के नाम से संबोधित किया जाता है। मूल्य किसी भी राष्ट्र की परंपरागत संस्कृति की धरोहर कहे जाते हैं। इनके माध्यम से मनुष्य अपने जीवन को गौरवमय बनाता है। ये देश काल और परिस्थिति सापेक्ष होते हैं और इनमें परिवर्तन होते रहते हैं।

मानव-मूल्यों का विकास मानव सभ्यता के विकास के साथ जुड़ा हुआ है। जब से मनुष्य ने उचित, अनुचित पर विचार कर अपने जीवन को सभ्य बनाने का प्रयास किया तभी से मूल्य हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग बनते चले गए। मूल्य मानव को केंद्र में रखकर चलते हैं और इन मूल्यों का आधार होती है मानवता जो देशकाल धर्म, समाज आदि के भेद से स्वतंत्र होती है। मानवता हम उस भाव को कहते हैं जिसमें मानव के मंगल की भावना छिपी हुई हैं। मानवता मानव मन का वह भाव है जिसके द्वारा स्वयं से पर और आत्म से सर्वात्म तक सबके हित में अपनी शक्तियों का प्रयोग कहा है। मानवता कोई मूर्त वस्तु नहीं वह अमूर्त है। मूल्यों की दृष्टि से मानवता की व्याख्या दो रूपों में की जा सकती है।

1. वह किसी भी अन्य मानव-मूल्यों की तरह मूल्य है।
2. वही सभी मानव-मूल्यों की संपत्ति है।

मानव अपने जीवन में कुछ भी कार्य करता है उन सबके पीछे मानवता उद्देश्य रूप में निहित रहती है। यही समस्त मानवीय मूल्यों का आधार है। यह मानव एवं मूल्यों के बीच अदृश्य कड़ी के रूप में कार्यरत रहती है। जब-जब मनुष्य में किसी अन्य मनुष्य के प्रति मंगल या हित की भावना जागृत होती है तो यह अवस्था मानवता कहलाती है और बाद में जब वह अपने उद्देश्य को व्यवहार में लाता है तो वह मूल्य कहलाते हैं।

मूल्य का स्वरूप

'मूल्य' शब्द 'मूल' धातु में 'यत्' प्रत्यय लगाने से बना है जिसका अर्थ कीमत, मोल, लागत, मजदूरी, वेतन, पूँजी होता है।[1]

वस्तुतः मूल्य एक अर्थशास्त्रीय शब्द है परंतु आज इस मूल्य शब्द ने अर्थशास्त्र की सीमाओं